महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी

एक श्रद्धाञ्जलि

महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी उर्दू ही नहीं, हिन्दी साहित्याकाश के एक ऐसे जगमगाते हुए नक्षत्र हैं जो अपने स्वर्गवास के पैंतीस वर्ष बाद आज भी अपनी ज्योति से उसे आलोकित किये हुए हैं और युगो युगो तक करते रहेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। उनका नाम सारे देश मे सुप्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर से अधिक नहीं तो कम तो किसी प्रकार भी नहीं मशहूर है। अपने नामराशी मुगल सम्राट अकबर की ही तरह हमारे स्वर्गीय महाकवि ने भी स्वदेश, स्वजाति, स्वभाषा को अजहद प्यार किया, ऐसा जैसा कि कम देखने मे आता है। विदेशी राज्य तथा सस्कृति के प्रभावस्वरूप स्वदेश तथा स्वजाति के गिरते हुए स्वाभिमान को इस महाकवि ने अपनी प्रबल लेखनी का सहारा दिया और उसे बिल्कुल गिरने से बहुत कुछ बचा लिया। इस दिशा मे उनका काम हमारे किसी भी महान से महान् राष्ट्रीय नेता से कम नही कहा जा सकता। दिल्ली दरबार के सम्बन्ध मे लिखी गई उनकी निम्नलिखित पक्ति—

महफिल उनकी, साकी उनका,
आँखे अपनी, बाकी उनका।

सुनकर स्वर्गीय महामना मालवीयजी अपनी कुर्सी से उछल पड़े थे और अकबर साहब को अपनी बाहुओं मे भरकर ठीक ही कहा था —"अकबर साहब ! जो बात देश के हम सियासी नेता अपनी लम्बी-लम्बी तक़रीरो मे आज इतने सालों से हजारो प्लैटफार्मों से कहते आ रहे हैं, उसे आपने इस खूबसूरती के साथ इन दो छोटी लाइनों मे कह दिया है कि तारीफ नही हो सकती। निस्सदेह आप हमारे सबसे बड़े कौमी शायर हैं। ईश्वर आपको चिरजीवी करे। हम सबको आप पर नाज है।

और हमारे इस महाकवि ने मालवीयजी द्वारा दिये गये "सबसे बड़े क़ौमी शायर के अपने पद को अपने जीवत के अन्तिम क्षण तक कभी कलकित नही होने दिया,